17 अक्टूबर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

16वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा दिनांक 6 से 15 अक्टूबर 2013 तक 16वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री नरेशजी मोदी नागपुर के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री विवेकजी काला, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री महावीरप्रसादजी कोलकाता, श्री मुकेशजी जैन ढाइद्वीप इन्दौर, श्री अनूपजी नजा ललितपुर, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर, श्री सुमनभाई दोशी, राजकोट, श्री ताराचन्दजी सोगानी जयपुर, श्री के.एल. जैन बाँसवाड़ा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन परिवार जयपुर, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा एवं मंच का उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया।

मंगलाचरण कु. परिणति पाटील जयपुर, मंच संचालन श्री शुद्धात्म प्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने तिलक लगाकर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने माल्यार्पणकर सभी अतिथियों का स्वागत किया।

प्रवचन - शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार (गाथा 321-344 तक) पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार (7वीं गाथा) पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचनसार (गाथा 11-12) पर प्रवचनों के पूर्व डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा एवं डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली आदि विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें - षट्कारक पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, **गुणस्थान विवेचन** पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, **छः सामान्य गुण** पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा, **नयचक्र व मोक्षमार्गप्रकाशक** पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा 116-125)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रात: 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के 47 शक्तियों पर व्याख्यान के तत्काल बाद 7.00 बजे तक जी-जागरण चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर प्रोजेक्टर द्वारा किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन (प्रवचनसार गाथा 320) के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दो विद्वानों के प्रवचन का लाभ मिलता था, जिनमें पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान जयपुर, पण्डित अरुणजी बण्ड जयपुर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, डॉ. नीतेशजी शास्त्री डडूका, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा चलाई गई।

शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे एवं शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री चिद्रुप बेलजीभाई शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा, श्री अजितप्रसाद वैभवकुमारजी जैन परिवार दिल्ली एवं श्री अनिलकुमार ज्ञानचन्दजी जैन (जैनको) इन्दौर थे।

इस शिविर में पंचपरमेष्ठी विधान एवं रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में किया गया।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रकाशचन्दजी छाबड़ा सूरत, पण्डित पूनमचंदजी छाबडा की स्मृति में श्रीमती श्रीकान्ताबाई छाबड़ा जयपुर, श्री भरत कुमार एन.मेहता सूरत, श्रीमती शशि-अजितजी तोतुका जयपुर, श्री सुधाकर अमोल अम्बेकर औरंगाबाद, श्रीमती कल्पना नरेन्द्रकुमारजी बड़जात्या जयपुर थे।

शिविर के समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने कहा कि शिविर में 36 विद्वानों के माध्यम से लगभग 650 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग 26 हजार 500 घंटों के सी.डी./ डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

सर्वोदय अहिंसा अभियान
दीपावली पोस्टर

सर्वोदय अहिंसा अभियान
दीपावली पोस्टर

सम्पादकीय -

वही ढाक के तीन पात

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

प्रखर प्रतिभा के धनी विराग ने जब माँ के सामने धनार्जन में महारत हासिल करने के लिए विशेष अध्ययन हेतु परदेश जाने की इच्छा व्यक्त की तो उसकी माँ ने उसे परदेश जाने से साफ मना कर दिया; क्योंकि वह जानती थी कि इस भोग प्रधान भौतिक युग में यदि पैसा जरूरत से ज्यादा हो जाय तो सन्मार्ग से भटक जाने की संभावनायें बढ़ सकती हैं; इसकी वह स्वयं भी भुक्तभोगी थी; फिर परदेश की तो बात ही निराली है। वहाँ का तो वातावरण ही भोग-प्रधान है। अतः वहाँ जाने की अनुमति देना तो संतान को कुएँ में धकेलने से भी बुरा है।

वस्तुतः विराग को अपने जन्म के पूर्व पिता के साथ घटी अघट घटनाओं की जानकारी नहीं थी और उसकी माँ उसे पिता का पूर्व इतिहास बताना भी नहीं चाहती थी; परन्तु वह अपने बेटे को वैसे ही वातावरण में जाने की अनुमति भी कैसे दे सकती थी ? अतः पहले तो उसने स्पष्ट मना ही कर दिया; परन्तु जब माँ ने उसकी परदेश जाने की तीव्र इच्छा, अति उत्साह और विशेष आग्रह देखा तो उसने **वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को स्मरण करते हुए और विराग की होनहार का विचार कर उसे अध्ययन हेतु परदेश जाने की अनुमति दे दी।** साथ ही अपने सदाचार को सुरक्षित रखने के लिए एक बार पुनः सचेत कर दिया।

लोक में बालहठ, त्रियाहठ और हमीर हठ - ये हठें प्रसिद्ध हैं; परन्तु समताश्री उन त्रियाओं में नहीं थी, वह विवेकशील थी, समय पर मुड़ना भी अच्छी तरह जानती थी। अतः उसने विराग को नहीं रोका।

माँ समता को उसके अबतक के आचरण को देखकर ही उसके चरित्र पर पूर्ण विश्वास था तथा उसने विराग को पालने में झुलाते समय भी लोरियाँ गा-गा कर सदाचार का पाठ पढ़ाया था। अतः वह विराग के प्रति पूर्ण आश्वस्त थी कि वह भोगों में नहीं भटकेगा।

बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी विराग अपनी माँ समताश्री से सदाचार की प्रेरणा पाकर परदेश में भी दुर्व्यसनों से सदा दूर तो रहा ही; नित्य देवदर्शन करने, रात्रि भोजन नहीं करने, पानी छानकर पीने, अभक्ष्य-भक्षण नहीं करने तथा लोक विरुद्ध कार्य न करने जैसे नैतिक नियमों का निर्वाह भी बराबर करता रहा।

वह दान-पुण्य परोपकार करने में भी कभी पीछे नहीं रहा; परन्तु आध्यात्मिक प्रवचन सुनने का सौभाग्य उसे अधिक नहीं मिला; क्योंकि पहले तो वह पढ़ाई करने के लिए परदेश में रहा, फिर उच्च शिक्षा के अनुकूल उत्तम आजीविका के लिए उसे परदेश में ही स्थाई रूप से रहना अनिवार्य हो गया; परन्तु वहाँ पर भी वह माँ को दिए हुए वचन को ध्यान में रखते हुए सदाचार और नैतिक नियमों का बराबर निर्वाह तो करता रहा; परन्तु वह मूल में भूल यह कर बैठा कि वह उस धर्माचरण रूप सदाचार को ही धर्म मानकर संतुष्ट हो गया। जबकि धर्म का स्वरूप धर्माचरण से कुछ अलग ही है। **(क्रमशः)**

आचार्यकल्प टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक विषय पर -

राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 12 से 14 अक्टूबर तक श्री टोडरमल स्नातक परिषद् एवं अखिल भारतवर्षीय दि.जैन विद्वत्परिषद् द्वारा '**आचार्यकल्प टोडरमलजी और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक**' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के प्रथम सत्र में दिनांक 12 अक्टूबर को अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अध्यक्षता की एवं मुख्य अतिथि श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल व श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल मंचासीन थे।

वक्ताओं के रूप में डॉ. राजीवजी प्रचंडिया अलीगढ (टोडरमलजी की सामायिक परिस्थितियाँ और मोक्षमार्गप्रकाशक की पृष्ठभूमि), डॉ. संजयजी जैन भोगाँव दौसा (मोक्षमार्गप्रकाशक : भाषा शैली की दृष्टि से) एवं डॉ. अरुणजी बंड जयपुर (करणानुयोग में द्रव्यानुयोग सुन्दर प्रयोग दूसरा व तीसरा अध्याय) ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंच संचालन श्री अखिलजी बंसल एवं मंगलाचरण श्री गौम्मटेश शास्त्री ने किया।

दिनांक 13 अक्टूबर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता स्नातक परिषद के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रजी जैन बाहुबली एन्क्लेव दिल्ली व श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली मंचासीन थे।

इस सत्र में डॉ. पी.सी.रांवका जयपुर (पण्डित टोडरमलजी : इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व), डॉ. महेशजी जैन भोपाल (पंचपरमेष्ठी का स्वरूप, पूज्यत्व एवं प्रयोजन सिद्धि एक नई दृष्टि), डॉ. दीपकजी जैन जयपुर (अगृहीत मिथ्यात्व नई दृष्टि से विवेचन : चतुर्थ अध्याय) एवं डॉ. जयन्तीलाल चेन्नई मंगलायतन (अन्यमतों की समीक्षा : जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में - पाँचवां अध्याय) आदि विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। मंच संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं मंगलाचरण श्री साकेत जैन ने किया।

दिनांक 14 अक्टूबर को अन्तिम सत्र के अध्यक्ष डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कैलाशचन्दजी छाबड़ा मुम्बई मंचासीन थे।

वक्ताओं के रूप में डॉ.वीरसागरजी जैन दिल्ली (मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की प्रमुख विशेषताएँ), डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई (चार प्रकार की इच्छा दु:ख का सामान्य स्वरूप), डॉ. मनीष जैन खतौली (टोडरमलजी का क्रांतिकारी विवेचन उपदेश का स्वरूप) एवं पण्डित राजकुमारजी जैन बांसवाड़ा (सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों में समन्वय और उपयोगिता) आदि विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

मंच संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण श्रीमती सुचिता जैन राघौगढ ने किया।

सिद्धभक्ति

8 तृतीय पूजन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आगे के सभी छन्द **कामिनी मोहन** छन्द में हैं; उनमें से आरंभ का छन्द इसप्रकार है –

(कामिनी मोहन)

जन्म–मरण कष्ट को टारि अमरा भये,
जरादि रोगव्याधि परिहार अजरा भये।
जय द्विविध कर्ममल जार अमला भये,
जय दुविध टार संसार अचला भये।।३।।

हे सिद्ध भगवान ! आप जन्म–मरण के कष्टों को टालकर **अमर** हो गये हैं और बुढ़ापा आदि व्याधियों को, रोगों को दूर करके **अजर** हो गये हैं। इसप्रकार आप **अजर–अमर** हो गये हैं।

इसीप्रकार द्रव्यकर्म और भावकर्म – इन दो प्रकार के कर्मों को जला के **अमल** हो गये हैं और द्रव्यसंसार और भावसंसार – इन दो प्रकार के संसार को टालकर आप **अचल** हो गये हैं।

इसप्रकार हे सिद्ध भगवान ! आप **अजर–अमर** तथा **अमल–अचल** हो गये हैं।

तात्पर्य यह है कि अब आपको न कभी बुढ़ापा आयेगा और न आप कभी मरेंगे; क्योंकि ये अवस्थाएँ तो देहधारियों को होती हैं और आप तो देह से रहित हो गये हैं, विदेही हो गये हैं, अदेही हो गये हैं।

इसीप्रकार मोह–राग–द्वेषरूप भाव भावकर्म हैं, मैल हैं, मल हैं तथा ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म भी इन्हीं मोह–राग–द्वेषादि भावों से बँधते हैं और मोहकर्म के उदय से मोह–राग–द्वेषभाव होते हैं; अत: ये द्रव्यकर्म भी मैल ही हैं; क्योंकि **इनके आगे भी मोह–राग–द्वेषरूप मैल है और पीछे भी वहीं मोह–राग–द्वेष हैं।**

हे सिद्ध भगवान ! आपने द्रव्यकर्म और भावकर्म दोनों का नाश कर दिया है, अभाव कर दिया है; अत: आप **अमल** हो गये हैं।

उसीप्रकार स्त्री–पुत्रादि, धन–धान्यादिरूप द्रव्य संसार और पर में एकत्व–ममत्वरूप तथा पच्चीस कषायरूप भाव संसार टाल के, दूर कर, छोड़कर चर्तुगति के परिभ्रमण से मुक्त होकर अचल पंचमगति को प्राप्त हो गये हैं; अत: अब आपको कभी भी अपने स्वभाव से और अपने स्थान से भी च्युत नहीं होना होगा; अत: आप **अचल** हो गये हैं।

इसप्रकार आप पूर्णरूप से **अजर, अमर, अमल** और **अचल** हो गये हैं। अनन्तकाल तक के लिए अनन्त सुखी हो गये हैं। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का –

राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर रविवार, दि. 13 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल के. मोटाणी मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेशकुमारजी लुहाड़िया दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन दिल्ली, श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन दिल्ली, श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली, श्री मंगलसेनजी जैन दिल्ली, श्री जे.के. जैन दिल्ली, श्री मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, श्री नितिन सी. शाह मुम्बई आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

राजस्थान की कार्यकारिणी के अन्तर्गत पण्डित अभयकुमारजी देवलाली (परामर्शदाता), पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा (प्रदेश महामंत्री), श्री अजितजी शास्त्री अलवर (प्रदेश उपाध्यक्ष), डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर (प्रदेश उपाध्यक्ष), श्री गणतंत्रजी शास्त्री आगरा (प्रचार मंत्री), श्री राजेशजी शास्त्री जयपुर (संभाग प्रभारी) एवं श्री संजयजी सेठी (अध्यक्ष–जयपुर महानगर) आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

जयपुर महानगर फैडरेशन की गतिविधियों का विवरण श्री संजयजी सेठी, दिल्ली व उ.प्र. प्रान्त की गतिविधियों का विवरण प्रमोदजी जैन (बड़ौत वाले) दिल्ली, राज.प्रदेश की गतिविधियों का विवरण प्रदेश मंत्री श्री राजकुमारजी जैन बांसवाड़ा ने दिया।

इसके अतिरिक्त श्री गणतन्त्रजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं सर्वोदय अहिंसा अभियान द्वारा प्रकाशित दीपावली पर पटाखे न फोड़ने सम्बन्धी पोस्टर का विमोचन डॉ. भारिल्ल आदि सभी मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया।

मंच संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण श्री सम्यक् अजित जैन अलवर ने किया।

टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा –

विशेष गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 16वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 11 अक्टूबर को **'पण्डित टोडरमलजी की मौलिक कृति मोक्षमार्ग प्रकाशक का मौलिक सातवाँ अधिकार'** विषय पर एक विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री श्रेयांसकुमारजी जैन कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि श्री पृथ्वीचंदजी दिल्ली व श्री प्रदीपजी मोदी मकरोनिया सागर थे।

इस अवसर पर पीयूष जैन, संदीप सेठ, सौरभ जैन, अनुभूति जैन, अभिषेक जैन, नितिन जैन, प्रशांत जैन, ईर्या जैन, सचिन जैन आदि विद्यार्थिओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से पीयूष जैन एवं शास्त्री वर्ग से अनुभूति जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। निर्णायक के रूप में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे।

संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्र सुमतिनाथ अंबेकर और साकेत जैन ने एवं मंगलाचरण समकित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

सर्वोदय अहिंसा अभियान
दीपावली पोस्टर

सर्वोदय अहिंसा अभियान दीपावली पोस्टर

17 अक्टूबर 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

शोक समाचार

1. कानपुर (उ.प्र.) निवासी श्री राजकुमारजी जैन (राजू भाई) का दिनांक 29 सितम्बर को 62 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जैन अध्यात्म को समर्पित एक लौह पुरुष थे। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित व अत्यन्त सक्रिय थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1001/- रुपये प्राप्त हुये।

2. जौहरी बाजार-जयपुर निवासी श्री विजयचन्दजी मुशरफ के सुपुत्र **श्री मनोजजी मुशरफ** का अल्पायु में दिनांक 1 अगस्त 2013 को देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी थे। आपकी स्मृति में 201/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद।

3. जसवंतनगर-इटावा (उ.प्र.) निवासी श्रीमती विमलेश जैन धर्मपत्नी श्री इन्द्रजीत जैन का दिनांक 24 सितम्बर स्वाध्याय व आत्मचिन्तनपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। जयपुर के शिविरों में आकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करती थी। आपने गुरुदेव के सानिध्य में भी समय व्यतीत किया था। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/- रुपये प्राप्त हुये।

4. जयपुर (राज.) निवासी श्री रसिकलालजी मोतीचन्दजी दोशी का दिनांक 24 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 11 हजार रूपये संस्था को प्राप्त हुये।

5. बानपुर (उ.प्र.) निवासी पण्डित कैलाशचन्दजी की माताजी **श्रीमती छोटीबाईजी** का दिनांक 24 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

ताम्रपत्र पर ग्रन्थ

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव द्वारा विरचित नियमसार व पंचास्तिकाय ग्रन्थ की ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कृति का विमोचन दिनांक 12 अक्टूबर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ।

ज्ञातव्य है कि पूर्व में समयसार ग्रन्थ भी ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हो चुका है तथा अब प्रवचनसार व अष्टपाहुड पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

E-mail - ptmanojjain@gmail.com
Phone : +917599301008

धन्यवाद

(1) बैद श्री शान्तिशरणजी जैन (मैनपुरी वालों) की दिनांक 27 दिसम्बर 2013 को 13वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी पुत्री-दामाद श्रीमती रमा जैन ध.प. श्री राकेशचंदजी जैन (महावीर स्कूल) जयपुर की ओर से 1 विद्यार्थी के अध्ययन हेतु 30 हजार रुपये की राशि पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट को सधन्यवाद प्राप्त हुई।

(2) जयपुर (राज.) निवासी डॉ. अनामिका जैन धर्मपत्नी श्री मनीष जैन सुपुत्र श्री एम.पी. जैन द्वारा सुगन्धदशमी व्रत के उद्यापन के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

तत्त्वार्थसूत्र पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत टीका –

तत्त्वार्थमणीप्रदीप का विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ शिविर के अवसर पर रविवार, दि. 13 अक्टूबर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित तत्त्वार्थसूत्र की टीका **'तत्त्वार्थमणीप्रदीप' पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय तक)** का विमोचन भव्य समारोहपूर्वक श्री गजेन्द्रकुमारजी पाटनी मुम्बई एवं शिविर में पधारे देशभर के अनेक गणमान्य अतिथियों/विद्वानों के करकमलों द्वारा किया गया। 20/- रुपये कीमत वाले 5 हजार प्रतियों के इस प्रथम संस्करण पर श्री कान्तिभाई मोटानी परिवार मुम्बई के सहयोग से 5/- रुपये की छूट प्रदान की जा रही है। इस अवसर पर श्री गजेन्द्रकुमारजी पाटनी मुम्बई द्वारा साहित्य प्रकाशन हेतु 2.5 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री कृत **'नयरहस्य'**, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल कृत **'पंचास्तिकाय परिशीलन'** आदि कृतियों का भी विमोचन किया गया।

शीतकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा पाठशाला के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने हेतु दिनांक 24 सितम्बर से 6 अक्टूबर तक भिण्ड समाज के विशेष आमंत्रण पर शीतकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों की बालबोध सैद्धांतिक की कक्षा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, बालबोध शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा तथा अभ्यास कक्षायें पण्डित नरेन्द्रजी शास्त्री जबलपुर व पण्डित निखलेशजी दलपतपुर द्वारा ली गई। शिविर में लगभग 64 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

शिविर का आयोजन श्री महावीर दि.जैन परमागम मंदिर भिण्ड के तत्त्वावधान में पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री (सुनीलजी शास्त्री) के संयोजकत्व में किया गया। साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड द्वारा समयसार एवं पण्डित महेन्द्रजी द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127